



UNIVERSITY NEWS 05 OCTOBER 2025

AMAR UJALA
PAGE NO 7

TOI PAGE NO 3

I NEXT PAGE NO 5 NBT PAGE NO 6

हल्दी की फसल पर मंडरा रहा

है कवकजनित रोग का खतरा

लखनऊ। हल्दी की खेती अब एक नए खतरे के साये में है। लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में हुए एक ताजा शोध में खुलासा हुआ है कि हल्दी के पौधों पर ऐसे कवकजनित रोग हमला कर रहे हैं, जो पूरी फसल को नष्ट कर सकते हैं और खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन सकते हैं।

शोधार्थी डॉ. रामानंद यादव ने अपने अध्ययन में कई ऐसे फफूंद की पहचान की है, जिनके बारे में अब तक किसी वैज्ञानिक रिपोर्ट में उल्लेख नहीं किया गया था। इनमें तना सड़न, लेट ब्लाइट और चेस्टनट ब्लाइट जैसे विनाशकारी रोग शामिल हैं, जो फसल को विलुप्त कर सकते हैं। डॉ. यादव के अनुसार, इन कवकजनित रोगों से उत्पन्न पत्ती धब्बा रोग हल्दी की उपज और गुणवत्ता दोनों को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। (संवाद)

LU study identifies new fungal threats to turmeric crop

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: In a groundbreaking discovery that could reshape future of turmeric cultivation, Lucknow University research scholar Ramamand Yadav has identified two previously unreported fungal pathogens threatening the vital crop.

Under the guidance of professor Amritesh Chandra Shukla from LU's botany department, Yadav's research brought to light the destructive impact of fungal pathogens, Colletotrichum siamense and fusarium proliferatum, on turmeric.

Published in the esteemed 'New Disease Reports' by British Society for Plant Pathology, his study reveals that colletotrichum siamense is the cause of a severe leaf spot disease.

On the other hand, fusarium proliferatum, soon to be featured in Australasian Journal of Plant Pathology, is linked to rhizome rot, a condition that affects turmeric yield and quality significantly. This marks the first instance of these fungi being associated with tur-



This marks the first instance of these fungi being associated with turmeric cultivation

meric cultivation.

"To facilitate global research and response, the genomic sequences of these pathogens have been deposited in the NCBI GenBank database, with specific accession numbers provided for each. Additionally, pure cultures have been submitted to the National Agriculturally Important Microbial Culture Collection (NAIMCC) at ICAR-NBAIM in Mau, UP, ensuring that scientists worldwide could access these resources to develop effective diagnostic and control measures," said Yadav.

He said such steps would help scientists develop effective diagnostic and control measures.

CSIR funds research on ladybird beetle

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: In a significant boost to agricultural research, the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) has approved a grant of Rs 26 lakh under its ASPIRE programme to Professor Geetanjali Mishra from the department of zoology at Lucknow University.

The funding is earmarked for a groundbreaking research project titled "Elucidating the Role of Cuticular Hydrocarbons as Fitness Indicators in Biocontrol Agents: Ladybird Beetles," which is set to span three years. This research studies how the waxy coating on ladybirds shows us how healthy and effective they are as pest-control agents. "This project aims to delve into the chemical ecology of ladybird beetles, insects renowned for their natural pest control capabilities. By examining cuticular hydrocarbons (CHCs) present on the beetles' bodies, the research seeks to uncover how these chemicals serve as indicators of fitness, survival, and reproductive success," said Prof. Geetanjali, who is also dean of academics.



कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से बचाएगी हल्दी

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW(4 Oct): हल्दी को औषधीय और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता रहा है, लेकिन लखनऊ विश्वविद्यालय के शोधार्थी ने इसमें ऐसे तत्वों की पहचान की है, जो करक्यूमिन (हल्दी के पौधे में पाया जाने वाला पीला-नारंगी रंग का रासायनिक यौगिक) की मात्रा को बेहतर बनाने और सिंथेटिक कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से निपटने में मदद करेगा। विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में प्रोफेसर अमृतेश चंद्र शुक्ल के मार्गदर्शन में पीएचडी पूरी करने वाले डा. रामानंद यादव ने अपने शोध ग्रंथ में हल्दी में दो ऐसे कवक जनित रोगजनक की पहचान की है। उनका दावा है कि इनके बारे में पहले कभी रिपोर्ट नहीं किया गया। प्रो. शुक्ला ने बताया कि डा. यादव ने प्लांट मेटाबोलाइट्स आधारित फार्मूलेशन का उपयोग करके इन दोनों रोगजनक को इन-विट्रो के साथ-साथ ग्रीनहाउस स्थितियों में भी प्रबंधित किया।

हल्दी की फसल में नई बीमारी खोजी

■ NBT रिपोर्ट, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के बॉटनी विभाग की ओर से हल्दी की फसल में होने वाली दो नई बीमारियों की खोज की गई है। इसमें एक बीमारी कोलेटोट्राइकम सियामेन्से में जहां पत्तियों में धब्बा रोग हो जाता है तो वहीं दूसरी फ्यूजेरियम प्रोलिफेरैटम बीमारी से हल्दी में सड़न शुरू हो जाती है। यह बीमारियां पहली बार पहचानी गई हैं जिसे न्यू डिजीज रिपोर्ट्स में प्रकाशित भी किया गया है।

बॉटनी विभाग के प्रो. राम चंद्र शुक्ल के निर्देशन में डॉ. रामानंद यादव ने इस पर शोध किया है। इस शोध में प्लांट मेटाबोलाइट्स-आधारित फार्मूलेशन का उपयोग करके इन दोनों रोगजनकों को दूर करने पर भी काम किया गया। इससे हल्दी में करक्यूमिन की मात्रा को बेहतर बनाने और सिंथेटिक कीटनाशकों के नकारात्मक प्रभाव से निपटने में मदद करने के लिए नया प्रयोग किया। इससे इस बीमारी को दूर भी किया जा सकेगा।

DAINIK JAGRAN
PAGE NO 25

कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से निपटने में मदद करेगी हल्दी

जागरण संवाददाता • लखनऊ : हल्दी को औषधीय और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता रहा है, लेकिन लखनऊ विश्वविद्यालय के शोधार्थी ने इसमें ऐसे तत्वों की पहचान की है, जो करक्यूमिन (हल्दी के पौधे में पाया जाने वाला पीला-नारंगी रंग का रासायनिक यौगिक) की मात्रा को बेहतर बनाने और सिंथेटिक कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से निपटने में मदद करेगा।

विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में प्रोफेसर अमृतेश चंद्र शुक्ल के मार्गदर्शन में पीएचडी पूरी करने वाले डा. रामानंद यादव ने अपने शोध ग्रंथ में हल्दी में दो ऐसे कवक जनित रोगजनक की पहचान की है। उनका दावा है कि इनके बारे में पहले कभी रिपोर्ट नहीं किया गया। प्रो. शुक्ला ने बताया कि डा. यादव ने प्लांट मेटाबोलाइट्स आधारित फार्मूलेशन का उपयोग करके इन दोनों रोगजनक को इन-विट्रो के साथ-साथ ग्रीनहाउस स्थितियों में भी प्रबंधित किया, जो हल्दी में करक्यूमिन की मात्रा को बेहतर बनाने और सिंथेटिक कीटनाशकों के नकारात्मक प्रभाव से निपटने में मदद करेगा।

HINDUSTAN PAGE NO 9

हल्दी को नुकसान पहुंचाने वाले कवक खोजे

लखनऊ। एल्यू के वनस्पति विज्ञान विभाग के शोधार्थी डॉ. रामानंद यादव ने हल्दी को नुकसान पहुंचाने वाले दो रोग जनक कवक की पहचान की है। इसमें कोलेटोट्राइकम सियामेन्से और फ्यूजेरियम प्रोलिफेरैटम प्रकंद शामिल हैं। यह दोनों हल्दी की खेती को प्रभावित करते हैं। एल्यू के वनस्पति विज्ञान विभाग में प्रो. अमृतेश चंद्र शुक्ल के मार्गदर्शन में डॉ. रामानंद यादव ने कवक खोजे हैं।